

कथा सरिता

व्यस्त रहो, मस्त रहो

एक व्यक्ति को अपने जीवन में दो बार मानसिक सदमों से गुजरना पड़ा। पहली बार तब, जब उसकी सबसे प्यारी पाँच वर्ष की बेटी इस संसार से चल बसी। उसे और उसकी पत्नी को लगा कि वे इस विपत्ति को सह नहीं सकेंगे, किन्तु उसके दस महीने बाद ही उसे एक दूसरी लड़की हुई और वह भी पाँच दिन उनके बीच रहकर चल बसी। यह दूसरा मानसिक सदमा एक और बेटी से वियोग का था, जो उसके लिए अत्यंत असहनीय हो गया। इस घटना के बाद उसका कहना था - 'मैं उसे सहन नहीं कर सका। मेरा खाना-पीना-सोना भी हराम हो गया। इसके बाद न कभी मैं आराम कर सका न निश्चित होकर जी सका। मेरे स्नायु बुरी तरह से झकझोर उठे और मेरी आत्मा टूटने लगी।' इसके बाद वह डॉक्टरों के पास गया। एक डॉक्टर ने उसे नींद की गोलीयाँ खाने को दीं तो दूसरे ने उसे यात्रा पर जाने का सुझाव दिया। उसने ये दोनों बातें करके देखीं, पर उसे कोई लाभ नहीं हुआ। उसने बताया - 'मुझे ऐसा लगता था कि मानो किसी ने मेरे शरीर को शिकजे के बीच रख दिया है और उसे अधिकाधिक कसता जा रहा है।' लेकिन उस व्यक्ति का एक चार वर्षीय बालक भी था। आश्चर्य की बात है कि उसने ही उसे उसकी समस्या का समाधान सुझाया। एक दिन दोपहर के बाद जब वह व्यक्ति खिन्न बैठा था, वह आया और बोलने लगा - 'पिताजी! मेरे लिए एक नाव बना दीजिए, प्लीज!' नाव बनाने की मन:स्थिति उस व्यक्ति की नहीं थी, लेकिन बच्चे के बालहट के कारण उसे नाव बनाने के लिए राजी होना पड़ा। नाव का वह खिलौना बनाने में उसे पूरे तीन घंटे लगे, लेकिन नाव बन जाने के बाद उसे बहुत मानसिक शांति और राहत महसूस हुई, जिसका अनुभव उसने पिछले कई महीनों से नहीं किया था और जिसे महसूस करने के लिए वह परेशान था। तभी उसे यह बात समझ में आई कि जिस काम को करने में जुझारूपन और सोच-विचार की आवश्यकता हो, उस कार्य को करते समय चिंता नहीं रहती। वह यह बात समझ गया था कि नाव बनाने के कार्य की व्यस्तता ने उसकी चिंता को समूलरूप से उखाड़ दिया है। अतः उसने आजीवन स्वयं को व्यस्त रखने का निश्चय किया।

विश्वविख्यात चर्चिल अपने जीवन में अठारह घंटे कार्य करते थे। एक बार उससे यह पूछा गया - 'इतनी अधिक जिम्मेदारियों से आपको चिंता नहीं होती?' उत्तर में उसने कहा - 'मेरे पास समय ही कहाँ है कि मैं चिंता करूँ।'

सच्ची आज़ादी

परिवार के सदस्यों के बात-बात पर टोकने से परेशान होकर एक युवक ने घर छोड़ने का निश्चय कर लिया। रात के अंधेरे में अपनी अटैची उठा वह चुपचाप स्टेशन की ओर चल पड़ा। रास्ते में गांव के मास्टरजी ने उसे बदहवास सा देख उसकी परेशानी की वजह पूछी। युवक ने बताया कि वह घर के बंधनों से परेशान हो गया है। उसे थोड़ी भी आज़ादी नहीं है, इसलिए वह घर छोड़कर जा रहा है। मास्टरजी ने युवक से रात वहीं बिताकर सुबह निकल जाने को कहा। वह लेटने जा रहा था तब उन्होंने उसकी चारपाई के नजदीक दो दीपक जला दिए। एक को काँच के बने स्टैंड के अंदर रखा जबकि दूसरे को खुले में। खुले में रखा दीपक थोड़ी ही देर में बुझ गया, जबकि स्टैंड में रखे दीपक की लौ बरकरार थी। मास्टरजी बोले, 'देखो! जो दीपक बंधनमुक्त और स्वच्छंद था वह असमय ही बुझ गया जबकि जो सुरक्षा घेरे में था, वह अब भी सब तरफ प्रकाश फैला रहा है। उसे हवा-पानी किसी का भय नहीं है।' युवक को अपनी गलती का एहसास हुआ। अगली सुबह मास्टरजी के पैर छूकर वह अपने घर की ओर चल पड़ा।

शिक्षा -बंधन और सुरक्षा-कवच के बीच बहुत बारीक फर्क होता है जिसे समझना आज के युवा साथियों के लिए आवश्यक है।

मृत्यों की ओर बढ़े...पेज 1 का शेष

बड़ा प्रमाण है। इससे ही समाज बदलाव की ओर अग्रसर होगा। इस मौके पर शिक्षा प्रभाग के उपाध्यक्ष ब्र.कु. मृत्युंजय, राष्ट्रीय को-ऑर्डिनेटर हरीश शुक्ला तथा प्रोफेसर ममता शर्मा ने भी विचार व्यक्त किए। इस मौके पर एमबीए एवं पोस्ट ग्रेजुएट डिग्री धारकों को डिग्रीयां दी गई।

आयोजित हुआ समारोह: इस मौके पर डिग्री धारकों के लिए समारोह का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में राजस्थान के केन्द्रीय स्कूलों के शिक्षक व भारत स्काउट गाइड के सदस्य भी मौजूद थे।

मेहनत

बेरोजगारी से तंग आकर एक युवक गहरी खाई में गिरकर आत्महत्या करने जा रहा था। वहाँ तपस्या कर रहे साधु ने उसे ऐसा करते देखा तो वह जोर से चिल्लाया और बोला -अरे, अरे! क्या कर रहे हो? आगे गहरी खाई में नदी बह रही है, गिरते ही मर जाओगे। युवक एक पल के लिए रुका और बोला -'मरने ही तो जा रहा हूँ।'

'तुम क्यों मरना चाहते हो?' साधु ने फिर पूछा।

'मैं ज़िन्दगी से तंग आ चुका हूँ। नौकरी के लिए सब जगह भटक लिया लेकिन नौकरी नहीं मिली। ऐसे तो मेरी सारी पढ़ाई बेकार चली जाएगी।' युवक ने जवाब दिया।

तब तक साधु युवक के पास आ चुका था। उसने दोबारा सवाल किया। 'कितने साल पढ़ाई की है तुमने?'

'सोलह साल।' युवक ने मायूस होकर जवाब दिया।

साधु ने उसके कंधे पर हाथ रखते हुए कहा - 'बेटा, तुम्हारी सोलह साल की पढ़ाई तुम्हारे किसी काम नहीं आई, इसलिए तुम आत्महत्या कर रहे हो। तुम्हारे माता-पिता ने तो तुम्हारा इक्कीस साल तक पालन-पोषण किया है। अगर तुम आत्महत्या कर लोगे तो उनकी इक्कीस वर्ष की मेहनत बेकार हो जाएगी। तो उन्हें भी तुम्हारी तरह आत्महत्या करनी पड़ेगी।'

युवक निरुत्तर हो गया। उसने साधु के चरण छूकर क्षमा मांगी और तेज गति से दौड़ता हुआ वापस अपने घर की तरफ लौट गया।

ईमानदारी

सुदूर पूर्व का एक राजा जब वृद्ध हो गया तो उसे अपने उत्तराधिकारी की चिंता सताने लगी। एक दिन उसने राज्य के सभी नौजवानों को महल में इकट्ठा किया। उन्हें एक-एक बीज देकर कहा कि वह चाहता है कि सभी नौजवान उन्हें बोएँ और ठीक एक साल बाद बीज से उगे पौधे को लेकर आएँ। तब वह अपने उत्तराधिकारी की घोषणा करेगा। सभी युवक बीज लेकर घर आ गए और पूरी शिद्दत से उसकी देखभाल में जुट गए। इन्हीं में सुरथ नामक एक नौजवान भी था। वह भी खुशी-खुशी बीज को खाद-पानी देता रहा। तीन हफ्ते बीत गए। सभी युवक अपने नन्हे पौधे को लेकर इटला रहे थे, लेकिन सुरथ के बीज से अंकुर भी नहीं फूटा था। तीन हफ्ते, चार हफ्ते.... इसी तरह छह हफ्ते बीत गए। सुरथ मायूस हो गया। आखिर वह दिन भी आ गया जब सबको राजा के सामने उपस्थित होना था। सबके गमलों से रंग-बिरंगे फूल लहलहा रहे थे, लेकिन सुरथ का गमला खाली था। उसे लगा उसने बीज बर्बाद कर दिया है और अब राजा उसे मौत की सजा सुनाने वाला है। तभी राजा ने सुरथ को अपना उत्तराधिकारी घोषित किया। राजा ने बताया कि साल भर पहले उसने सबको उबले हुए बीज बाँटे थे जिनका अंकुरण असम्भव था। वास्तव में वे सभी के आचरण को परीक्षा ले रहे थे।

शिक्षा -ईमानदारी से चालाकी भी मात खा जाती है।

समर्थ क्षमा... पेज 5 का शेष

मस्त और मज़बूत कद-काठी के उस फकीर ने उसे धर दबोचा और उसकी ज़ोरदार पिटाई कर दी। अपनी हड्डी-पसली एक होते देखकर वह दुष्ट व्यक्ति दर्द से चिल्ला उठा और बोला, अरे भाई! तुम मुझे क्यों मार रहे हो? तुम्हारे जीजस के वचन का क्या हुआ? वह फकीर मुस्कराते हुए बोला कि मैं उस वचन की मर्यादा निभा रहा हूँ। उन्होंने दूसरे गाल तक की छुट्टी दी थी, आगे तो मैं उस वचन से मुक्त होकर तुम्हें सबक सिखा रहा हूँ। उसने व्यंग्य से कहा कि ज़रा सोचो, मेरे पास तीसरा गाल भी तो नहीं है जो तुम्हारे सामने कर दूँ। जाओ अब तुम्हें माफ़ करता हूँ। यह भी तुम्हें कल्याण के भाव से सिखाने के लिए था। वैसे मेरा तुमसे कोई वैर-विरोध अभी भी नहीं है। भविष्य में दुष्टता की ऐसी गलत आदत न बन जाये, इसके लिए ...।

क्षमा एक आंतरिक सुवास है, इसे समर्थवान होकर विकसित करें। दूसरों के साथ इसे व्यवहार में भी बनाए रखें। परन्तु सावधान भी रहें। काटें नहीं, लेकिन फूफकार करना भी न छोड़ें।



मालवा-म.प्र.। एस.डी.एम. जी.एस.डावरजी को चित्र प्रदर्शनी समझाते हुए ब्र.कु.अनीता।



नवसारी-गुज.। युवा साइकिल यात्रा के अन्तर्गत नरन लाला इंजीनियरिंग कॉलेज में कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुए ब्र.कु. प्रीति, ब्र.कु.भानु, कॉलेज के निदेशक रमेश भाई गांधी तथा ब्र.कु. भावेश तथा अन्य।



दिल्ली-कालकाजी.। 'से गुड बाय टू स्ट्रेस', मेडिटेशन एंड टेन्शन फ्री कैम्प के अवसर पर कैन्डलस द्वारा प्रकाश करते हुए ब्र.कु.प्रभा, ब्र.कु.लक्ष्मी तथा अन्य बहनें।



केकड़ी-राज.। नवदुर्गा झाँकी के उपलक्ष्य पर अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक लक्ष्मण दास स्वामी को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु.सुषमा तथा अन्य।



शिरूर.। नवरात्री के उपलक्ष्य पर महाराष्ट्र नवनिर्माण सेना की ओर से ब्र.कु.अर्चना को आदिशक्ति पुरस्कार से सम्मानित करने के बाद समूह चित्र में जिलाध्यक्ष भोडवे साहब, तालुकाध्यक्ष बले साहब, शहराध्यक्ष साखरे बहन, आयोजक सुशांत कुटे, पुरस्कारार्थी तथा अन्य गणमान्य जन।



मुंबई-वाशी.। सर्वधर्म सम्मेलन में परमात्मा का परिचय देते हुए ब्र.कु.शीला। साथ हैं मुख्य ग्रंथी अमरदीप सिंह, मुनिश्री प्रशांत कुमार, मुनिश्री कुमुद कुमार, मुनिश्री नरेश कुमार, मुफित जमशेद।